Volume-6, No. 1, Feb-2019, pp.Hin.11-17

मूल्यांकन पद्धति का भारतीय इतिहास आज के सन्दर्भ में

डा0 कृष्ण चन्द्र गौड़, अध्यक्ष, शिक्षा संकाय
डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कालेज, अनूपशहर
बुलन्दशहर (उ0प्र0) भारत।

साराँश
प्राचीनकाल से ही शैक्षणिक मापन के लिए किसी न किसी प्रकार की परीक्षा का प्रयोग किया जा रहा है। प्रत्येक शिक्षक जानना चाहता है कि उसने विद्यार्थी को जो कुछ पढ़ाया है, उसे उसने कितना ग्रहण किया है, इसका परीक्षण छात्र की प्रगति, रुचि व योग्यता का मापन करती है। मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती है। मूल्यांकन के द्वारा अधिगम, परिस्थितियों तथा सीखने के अनुभवों का पता चलता है। क्विलिन एवं हन्ना ने मूल्यांकन के सम्बन्ध में कहा है– ''विद्यालय में हुए छात्रों के परिवर्तन के सम्बन्ध में प्रदत्तों के संकलन तथा उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया को मूल्यांकन कहते हैं।'' यह शिक्षा के आदान–प्रदान का एक उद्‌देश्य है, इसके द्वारा शिक्षक को अपनी शिक्षण–विधि एवं शिक्षा– योजना में सुधार करने का अवसर प्राप्त होता है। अभिभावक को मूल्यांकन द्वारा अपने बालकों की प्रगति यथोचित ढंग से ज्ञात होती रहती है।
मुख्य शब्द– मापन, मूल्याकंन, परीक्षण, शिक्षक, अभिभावक

प्राचीनकाल से ही शैक्षणिक मापन के लिए किसी न किसी प्रकार की परीक्षा का प्रयोग किया जा रहा है। आज शिक्षक शिक्षार्थियों के सीखने की प्रगति को जानने के लिए विभिन्न प्रविधियों का प्रयोग करता है। जैसे– मौखिक प्रश्नोत्तर, विद्यालय कार्य, गृह–कार्य, छात्रों के व्यवहार का निरीक्षण, साक्षात्कार, लिखित परीक्षण, प्रयोगात्मक परीक्षण आदि युक्तियाँ। वर्तमान समय में शैक्षणिक मापन के क्षेत्र में प्रगति के तीन प्रमुख रूप हैं–

- परीक्षण
- मापन
- मूल्यांकन

प्रत्येक शिक्षक यह जानना चाहता है कि उसने विद्यार्थी को जो कुछ पढ़ाया है, उसे उसने कितना ग्रहण किया है, इसका परीक्षण छात्र की प्रगति, रुचि एवं योग्यता का मापन करती है। छात्र की मानसिक योग्यता की माप करने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की आवश्यकता होती है। प्रचलित परीक्षाएँ विद्यार्थियों के किसी एक सीमित क्षेत्र का ही मापन करती हैं वे उनके सर्वांगीण विकास एवं विश्वसनीय ढंग से वास्तविक योग्यता का मापन करने में सर्वथा असमर्थ है।

आधुनिक शिक्षा–पद्धति में शिक्षा का उद्‌देश्य बालक का सर्वांगीण विकास माना जाता है। इसके लिए उसकी जन्मजात शक्तियों एवं व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं का जानना आवश्यक है। विद्यालय में विभिन्न योग्यताओं वाले छात्र होते हैं, जिन्हें कि एक ही प्रकार का पाठ्‌यक्रम या एक ही प्रकार की शिक्षण–विधि से शिक्षण करना उपयुक्त एवं लाभप्रद नहीं होता है। अतः बालक के मानसिक स्तर और क्षमता को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक है। आज शिक्षा के क्षेत्र में बालक के शारीरिक संवेगात्मक, मानसिक एवं सामाजिक अनुकूलन पर ध्यान दिया जाता है। व्यक्तित्व के पूर्ण अनुकूलन के लिए बालक की बुद्धि, विषय–ज्ञान या उपलब्धि अभिक्षमता, रूचि, अभिवृत्ति तथा व्यक्तित्व के गुणों को ध्यान में रखते हुए उचित शैक्षिक निर्देशन देना चाहिए। उसके सर्वांगीण विकास के लिए शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं का मापन और मूल्यांकन करना आवश्यक है।

मूल्यांकन

मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। मूल्यांकन के द्वारा अधिगम परिस्थितियों तथा सीखने के अनुभवों के लिए प्रयुक्त की जाती है। इसका प्रयोग विद्यालय कार्यक्रम, पाठ्‌यक्रम, शैक्षिक सामग्री, शिक्षक तथा छात्रों की जाँच के लिए किया जाता है। इसके द्वारा शिक्षण–उद्‌देश्यों, सीखने में अनुभवों तथा परीक्षणों में घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों के विचार जानना आवश्यक है–

- **जे. डब्ल्यू राइटस्टोन के अनुसार–** ''मूल्यांकन एक नवीन प्राविधिक पद है जिसका प्रयोग मापन

धारणा को परम्परागत जाँचों एवं परीक्षाओं की अपेक्षा अधिक व्यापक रूप में व्यक्त करने के लिए किया गया है।''[1]

- **क्विलिन व हन्ना के अनुसार–** ''विद्यालय में हुए छात्रों के व्यवहार परिवर्तन के सम्बन्ध में प्रदत्तों के संकलन तथा उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया को मूल्यांकन कहते हैं।''[2]
- **मोफात के कथनानुसार–** ''मूल्यांकन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है और यह छात्रों की औपचारिक शैक्षिक उपलब्धियों की अपेक्षा अधिक है। यह व्यक्ति के विकास में अधिक रुचि रखता है। यह व्यक्ति के विकास को उसकी भावनाओं, विचारों तथा क्रियाओं से सम्बन्धित वांछित व्यवस्था परिवर्तनों के रूप में व्यक्त करता है।''[3]

विभिन्न विद्वानों के विचारों के मूल्यांकन के सम्बन्ध में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं–

- मूल्याकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
- मूल्यांकन सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है।
- मूल्यांकन का शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ट सम्बन्धित होता है।
- मूल्यांकन परीक्षण की एक व्यापक प्रक्रिया है, जिसमें मापन तथा जाँच दोनों ही सम्मलित हैं।
- मूल्यांकन वर्णनात्मक तथा संख्यात्मक दोनों ही हो सकते हैं।
- मूल्यांकन छात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से सम्बन्धित है।
- मूल्यांकन में छात्रों के व्यवहार के विषय में सामग्री एकत्रित करने के समस्त साधन निहित रहते हैं।
- मूल्यांकन निर्देश की उपलब्धि को जाँचने के साथ उसे उन्नत भी बनाता है।

मूल्यांकन की आवश्यकता–

शिक्षा के आदान–प्रदान का एक उद्देश्य होता है। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षार्थी ने क्या प्राप्त किया और उससे वह कहाँ तक लाभान्वित हुआ है। शिक्षक भी यह जानना चाहता है कि शिक्षा के उद्देश्य हैं प्रयोजन को प्राप्त करना शिक्षण की सफलता का आंकलन करना, शिक्षार्थी की उपलब्धियों को जानने के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। मूल्यांकन की आवश्यकता छात्रों, अध्यापकों और अभिभावकों– तीनों की दृष्टि से महत्व रखती है। छात्रों को अपनी प्रगति और योग्यता का पता लगने के साथ ही उनमें आत्मबोध और आत्म विश्वास का विकास होता है। इस प्रकार छात्र को अध्ययन और परिश्रम करने की प्रेरणा भी मिलती है।

- **शिक्षक–** शिक्षक को अपनी शिक्षण–विधि एवं शिक्षा योजना में सुधार करने का अवसर मिलता है।
- **अभिभावक–** अभिभावक को मूल्यांकन द्वारा अपने बालकों की सही प्रगति ज्ञात होती रहती है।

मूल्यांकन के उद्देश्य–

- मूल्यांकन शिक्षण–पद्धतियों में सुधार करना है।
- मूल्यांकन परीक्षा–प्रणाली में सुधार करना है।
- छात्रों की योग्यताओं, कुशलतओं आदि की जानकारी प्राप्त करना।
- छात्रों की सफलताओं, असफलताओं आदि का पता लगाना।
- शैक्षिक उद्देश्यों की जाँच करना।
- शैक्षिक कार्यक्रम, शिक्षण विधियों आदि की उपयुक्तता की जाँच करना।

मूल्यांकन की प्रविधियां–

आधुनिक विचारधाराओं के अनुसार अच्छी मूल्यांकन प्रविधि वह है, जिसमें व्यवहार के वांछित परिवर्तन के वैध प्रमाणों का मापन करने की क्षमता हो। मूल्यांकन केवल विद्यालय–विषयों में परीक्षा के परिणामों से नहीं हो सकता है। वास्तव में ये परीक्षाएँ तो मूल्यांकन का एक अंग मात्र है। बालक के सम्पूर्ण व्यतित्व का मूल्यांकन करने के लिए हमें इन परीक्षाओं के अतिरिक्त और भी कई प्रकार की परीक्षाओं एवं रितियों का प्रयोग करना पड़ेगा। मूल्यांकन की दो प्रविधियां हैं– परिमाणात्मक प्रविधियाँ एवं गुणात्मक प्रविधियाँ

परिमाणात्मक प्रविधियां

- **मौखिक प्रविधि–** यह वैयक्तिक विधि है। इसमें छात्र परीक्षक के सामने उसके प्रश्नों का उत्तर देता है। इससे पढ़ने की योग्यता, उच्चारण एवं सूचनांओं की जाँच होती है।
- **लिखित प्रविधि–** यह पद्धति काफी प्रचलित है। इसमें प्रश्नों का उत्तर लिखना सम्मलित होता है। इसके द्वारा ज्ञान व व्याख्या करने की योग्यता की जाँच होती है।
- **प्रयोगात्मक प्रविधि–** इसमें छात्र अपने कार्य का प्रदर्शन परीक्षक के सामने रखता है। इसका प्रयोग विज्ञान, कला, कृषि आदि में किया जाता है।

गुणात्मक प्रविधियाँ

संचयी अभिलेख– यह छात्र की सम्पूर्ण पारिवारिक, शैक्षिक आदि उपलब्धियों का अभिलेख है। इससे छात्र के दृष्टिकोण का पता चलता है।

- **एनेकडोटल अभिलेख–** इसमें छात्र के उन व्यवहारों का संकलन रहता है जो वे किसी घटना के समय प्रदर्शित करते हैं। इन अभिलेखों द्वारा छात्र के व्यक्तित्व के भिन्न–भिन्न पक्षों की जानकारी मिलती है।
- **निरीक्षण**– इसके द्वारा छात्रों के व्यवहार, क्रियाओं व संवेगात्मक तथा बौद्धिक परिपक्वता के सम्बन्ध में प्रमाण दिये जाते हैं।
- **जाँच सूची–** इसके द्वारा व्यक्तिगत सूचना एवं मत जाना जाता है।
- **रेटिंग स्केल–** इसका प्रयोग उन विभिन्न परिस्थितियों का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है, जो भिन्न–भिन्न मात्राओं में प्रस्तुत की जाती है इसके द्वारा छात्र के विशेष क्षेत्र की कुशलता की जाँच उसके व्यवहार प्रगति से कर सकते हैं।
- **प्रश्नावली**– छात्रों से उनकी रुचियों, रूझानों के विकास से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं।
- **साक्षात्कार–** इसके द्वारा व्यक्तिगत विशेषताओं, रुचियों आदि की जाँच की जाती है।

प्रचलित प्रणाली

निबन्धात्मक परीक्षा– हमारे देश में इसका प्रचलन अधिक है। इसमें छात्रों को पाठ्यक्रम के प्रश्नों के उत्तर एक निश्चित समय के अन्दर निबन्ध के रूप में लिखने होते हैं। इस परीक्षा के द्वारा छात्रों की भाषा–शैली, सुलेख, अभिव्यंजना–शक्ति, चिन्तन–धारा आदि का पता चलता है। इसमें आत्मगत तत्व बहुत अधिक होता है।

प्रत्येक प्रणाली में कुछ गुण एवं दोष दोनों ही होते हैं उनमें से कुछ गुण निम्नलिखित हैं –

- इसमें प्रश्नपत्र निर्माण करना सरल है तथा प्रश्न बनाना भी आसान है।
- ये सभी विषयों के लिए उपयुक्त है।
- इसके द्वारा अध्ययन की आदत का विकास होता है।
- इसके द्वारा भाषा व शैली परिमार्जित होती है।
- ये परीक्षाएँ छात्र व अध्यापक दोनों के लिए सुविधाजनक हैं।
- इसमें छात्र को उत्तर देने की स्वतन्त्रता होती है।
- इसके द्वारा एक ही प्रश्नपत्र से बहुत से बच्चों की परीक्षा सम्भव है जिससे समय, श्रम व धन की बचत होती है।
- निबन्धात्मक परीक्षाएँ छात्रों की मानसिक योग्यताओं तथा शक्तियों– तर्क, आलोचना, विचार, अभिव्यक्ति आदि के जाँचने में पूर्णरूपेण सहायक सिद्ध होती है।

दोष–

- इसमें विश्वसनीयता नहीं होती है।
- इसमें आत्मगत तत्व होती है।
- इसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से प्रश्न सम्मलित नहीं होते।
- इसमें स्पष्ट परिभाषित उद्देश्यों की कमी होती है।
- इसमें रटने पर अधिक बल दिया जाता है।
- इसमें वैधता की कमी है।
- मूल्यांकन में कठिनाई होती है। कोई अध्यापक ज्यादा अंक दे देते हैं और कुछ कम। निश्चित मापदण्ड नहीं है।
- इन परीक्षाओं के आधार पर यह कहना कठिन है कि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्र सामान्य ज्ञान व व्यवहार में भी प्रथम होगा।

प्रचलित परीक्षा प्रणाली दोषमुक्त है क्योंकि–

- छात्र केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए ही पढ़ते हैं और अध्यापक केवल छात्रों की परीक्षा में उत्तीर्ण कराने हेतु ही अध्यापन करते हैं।
- यह बालक की वास्तविक प्रगति की जाँच नहीं करती है। यह केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित रहती है।
- यह छात्रों को ज्ञान तो प्रदान करती है, लेकिन उसका अनुप्रयोग नहीं सिखाती।
- यह स्मरण शक्ति पर अधिक बल देती है।
- यह छात्रों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है। परीक्षा के दिनों में छात्र पर्याप्त विश्राम, खेलकूद आदि को तिलांजली दे देते हैं।
- इस परीक्षा–प्रणाली ने छात्रों के अभिभावकों के व अध्यापकों के नैतिक स्तर को गिरा दिया है, क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य परीक्षा उत्तीर्ण करना ही रह गया है।
- यह कोई वैज्ञानिक प्रणाली नहीं है, क्योंकि प्रतिभाशाली छात्र व सामान्य छात्र में यह विभेद नहीं कर पाती है।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारत में प्रचलित परीक्षा प्रणाली का एकमात्र लक्ष्य– परीक्षा है,

इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। इसके कारण बालकों में सृजनात्मकता का विकास करना एवं ज्ञान– पिपासा में बृद्धि करना कठिन हो गया है। प्रत्येक छात्र येन केन प्रकारेण अधिक अंक पाना चाहता है। उनके पास सरल अध्ययनमाला, नकल आदि के क्रियाकलाप ही रह गये हैं। अतः ऐसी परीक्षा–प्रणाली की आवश्यकता है जो उपर्युक्त दोषों से रहित हो।

परीक्षा की आवश्यकता–

उपर्युक्त दोषों की विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि इस प्रकार की प्रणाली को समाप्त कर देना चाहिए लेकिन परीक्षा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है, जो निम्नलिखित है –

- छात्र की योग्यता की जाँच आवश्यक है, जिससे यह पता चल सके कि कितना ज्ञान अर्जन हुआ और कितना शेष है।
- परीक्षा पथ–प्रदर्शन के लिए जरूरी है।
- छात्रों की उन्नति, चयन आदि के लिए आवश्यक है।
- सीखने व सिखाने की प्रक्रिया को प्रोत्साहन देने हेतु आवश्यक है।

सुधार हेतु सुझाव– परीक्षा की आवश्यकता से स्पष्ट है कि इसको समाप्त नहीं किया जा सकता। अतः शिक्षाशास्त्रियों के द्वारा इसमें सुधार के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं–

- वैयक्तिक प्रभाव को कम करने हेतु नवीन प्रणाली के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रयोग में लाये जाएँ।
- प्रश्न इस प्रकार के रखने चाहिए जो बालक की विषय संबंधी ज्ञान की वास्तविक परीक्षा कर सके अर्थात् इसमें ज्ञानात्मक, अवबोधात्मक, कौशलात्मक, अनुप्रयोगात्मक आदि से सम्बन्धित प्रश्न रखे जायें।
- परीक्षाएँ निष्पक्ष होनी चाहिए तथा छात्रों के सभी प्रकार के विकास से सम्बन्धित होनी चाहिए।
- छात्रों के उत्तरों का अंकन निष्पक्षता से किया जाना चाहिए। इस कार्य हेतु एक ही परीक्षा पुस्तिका को दो अध्यापक जाँचें।
- परीक्षा भयमुक्त होनी चाहिए।
- परीक्षा को शिक्षा से सम्बन्धित होना चाहिए।
- छात्रों के आन्तरिक अभिलेख का सहारा उनकी कक्षोन्नति में किया जाना चाहिए।

परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों में सुधार करना अत्यन्त आवश्यक है–

सुधार क्षेत्र–

प्रश्नपत्रों के निर्माण में

- शिक्षण उद्देश्यों के अनुरूप प्रश्न चयन।
- प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में।
- विकल्प प्रश्नों को महत्त्व न देना।
- प्रश्न कठिनता के क्रम से।
- प्रश्नों की भाषा सरल एवं स्पष्ट।
- सभी प्रश्नों के अंक समान।
- प्रश्नों की संख्या सम्पूर्ण पाठ्यक्रमानुसार।
- नवीन प्रकार के प्रश्नों की व्यवस्था होनी चाहिए।

परीक्षा प्रणाली के मूल्यांकन

- कक्षोन्नति की रीति में परिवर्तन।
- मौखिक परीक्षाओं की व्यवस्था।
- दो परीक्षकों की नियुक्ति।

उत्तर पुस्तिका के मुल्यांकन में

- छात्र तथा परीक्षक को पूछे प्रश्नों के उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिए।
- मूल्यांकन हेतु आदर्श उत्तर होने चाहिए।
- एक समय में केवल एक ही प्रश्न का मूल्यांकन करना चाहिए।
- समस्त उत्तर पुस्तिकाएँ एक ही परीक्षक द्वारा जाँची जानी चाहिए।
- आन्तरिक व बाह्य परीक्षाएँ ली जानी चाहिए।
- अंकन करते समय श्रेणी विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

नवीन प्रणाली

वस्तुनिष्ठ परीक्षण

ये वे परीक्षाएँ हैं जिनमें अच्छी परीक्षाओं के सभी गुण विद्यमान होते हैं। वस्तुनिष्ठ परीक्षा का लिखित रूप में सर्वप्रथम निर्माण होरासमैन ने सन् 1845 में किया था। आगे चलकर जार्ज फिशर, जे.एम. राइस, स्टार्च, थार्नडाइक आदि मनोवैज्ञानिक ने शैक्षिक उपलब्धि के मूल्यांकन करने के लिए वस्तुनिष्ठ परीक्षाएँ बनाईं।

वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं की विशेषताएँ–

- **विश्वसनीयता–** जब कोई परीक्षा किसी छात्र पर या समूह पर बार–बार किए जाने पर भी एक से ही अंक दे तो वह परीक्षा विश्वसनीय कहलाती है।
- **वैधता–** यदि कोई परीक्षा अपने निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त नहीं करती है तो उसे वैध परीक्षा नहीं कह सकते। एक वैध परीक्षा वह है जो उन्हीं विशिष्टताओं तथा गुणों का मापन करती है, जिसका मापन करने के लिए वह बनाई गई है।
- **वस्तुनिष्ठता–** यदि फलांकों पर परीक्षक की आत्मनिष्ठा का कोई प्रभाव न पड़े तो वह परीक्षा वस्तुनिष्ठ है।

- **विभेदीकरण**– इसके अन्तर्गत ऐसे प्रश्न होते हैं, जो मन्द, सामान्य तथा प्रखर बुद्धि के बालकों में आसानी से विभेद कर देते हैं।
- **व्यापकता**– इनमें पाठ्यक्रम का पूर्ण प्रतिनिधित्व होता है।
- **व्यावहरिकता–** छात्र व अध्यापक दोनों ही इन्हें पसन्द करते हैं। अंक देने में अध्यापक को कठिनाई नहीं होती।
- **उपयोगिता**– इन परीक्षाओं का निर्माण किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए होता है। उद्देश्य प्राप्ति के बाद छात्रों को पथ–प्रदर्शन दिया जा सकता है।
- **अंक देने में सरलता**– इसमें अंकन बहुत सरल होता है। कोई भी व्यक्ति निर्देशों की सहायता से कर सकता है।
- **परीक्षा सम्पादन में सुलभ**– इन परीक्षाओं के निर्देश व नियम इतने सरल व स्पष्ट होते हैं कि छात्र आसानी से समझ कर कार्य कर सकता है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्रकार

वस्तुनिष्ठ परीक्षा दो प्रकार की होती है–

1. प्रमापीकृत वस्तुनिष्ठ परीक्षा
2. अध्यापक निर्मित–वस्तुनिष्ठ परीक्षण

प्रमापीकृत परीक्षा में इसको प्रमापीकृत किया जाता है और इसे विशेषज्ञों द्वारा बनाया जाता है, जबकि अध्यापक निर्मित परीक्षा में इनका निर्माण विशेषज्ञों द्वारा नहीं किया जाता है, वरन् इनका निर्माण विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही विषय शिक्षक द्वारा किया जाता है। इन परीक्षणों का प्रयोग सामान्य रूप से नहीं किया जाता, जबकि प्रमापीकृत का प्रयोग सामान्य रूप से किया जा सकता है। प्रमापीकृत परीक्षा की विश्वसनीयता अधिक होती है, जबकि अध्यापक निर्मित परीक्षाओं की बहुत कम।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा– ये वस्तुस्थिति पर आधारित परीक्षाएँ हैं, जिसमें छात्रों को उत्तर देने की स्वतन्त्रता नहीं होती। इसमें प्रत्येक प्रश्न का एक सर्वशुद्ध उत्तर होता है। छात्र से उसी उत्तर की आशा की जाती है। यदि उत्तर उस अपेक्षा से अलग है तो त्रुटिपूर्ण समझा जाता है। वस्तुनिष्ठ प्रश्न संक्षिप्त होते हैं।

गुण–

- इसमें उत्तर देना सरल है।
- यह सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित है।
- इसमें अंकन करना सरल है।
- इसमें छात्र धोखा नहीं दे पाता।
- अंक प्रदान करने में भेदभाव नहीं होगा।
- यह अधिक विश्वसनीय है।
- इसके द्वारा छात्र के ज्ञान, ध्यान, तर्क, योग्यता आदि का भी पता चलता है।
- इसमें भाषा का अधिक प्रयोग नहीं होता। इस कारण उत्तर देने में भाषा रूकावट नहीं बनती।

दोष–

- इस परीक्षा में प्रश्न–पत्र निर्माण में बहुत अधिक समय व श्रम लगता है।
- इसमें भाषा शक्ति व भाव अभिव्यक्ति क्षमताओं का पता नहीं लगता।
- इसमें अनुमान की अधिक सम्भावनाएँ हैं।
- इसमें नकल की सम्भावनाएँ अधिक हैं।
- इसमें उत्तर देने में समय पर बड़ा ध्यान रखना पड़ता है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्रकार–

ये वस्तुनिष्ठ परीक्षा दो प्रकार की होती है–

1. अभिज्ञान रूप
2. प्रत्यास्मरण रूप

अभिज्ञान रूप–

1. एकान्तर प्रत्युत्तर रूप–

(क) सत्य/असत्य– इस प्रकार के प्रश्नों में सत्य व असत्य (ज्तनम थ्ंसेम) दोनों ही प्रकार के कथन होते हैं। इनमें छात्रों को इनके सामने सत्य/असत्य लिखने को कहा जाता है। जैसे–

(1) दिल्ली भारत की राजधानी है। (सत्य/असत्य)

(2) फिरोज तुगलक ने ताँबे का सिक्का चलाया था। (सत्य/असत्य)

(ख) हाँ/ना– इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर हाँ/ना में देना होता है। जैसे–

(1) क्या महावीर स्वामी का जन्म महात्मा बुद्ध से पहले हुआ था? (हाँ/ना)

(2) दो पदों के मेल को समास कहते हैं। (हाँ/ना)

2.बहुविकल्प रूप–इस प्रकार के प्रश्नों में एक प्रश्न के उत्तर के लिए कई विकल्प दिये होते हैं, इनमें से छात्र को सबसे ठीक उत्तर छाँटकर निशान लगाने को कहा जाता है।

जैसे–

(अ) भारत को स्वतन्त्रता मिली थी–

(1) 1950 ( )
(2) 1857 ( )
(3) 1947 ( )
(4) 1948 ( )

(ब) औरंगजेब की मृत्यु हुई थी–

(1) 1707 ( )
(2) 1757 ( )
(3) 1680 ( )
(4) 1919 ( )

(स) सूर्योदयः का सन्धि–विच्छेद है–

(1) सूर्यः + उदयम् ( )

(2) सूर्य + उदय ( )

(3) सूर्य + उदयः ( )

(4) सूर्यम् + उदयम् ( )

3.मिलान रूप–इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को दो सूची दी जाती है, उनका मिलान करें–

(1) प्रदेश	**राजधानी**
उत्तर प्रदेश	जयपुर
दिल्ली	भोपाल
राजस्थान	लखनऊ
मध्यप्रदेश	दिल्ली

(2) बाई तरफ ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम हैं और दायीं तरफ ऐतिहासिक घटनाएँ दी हैं, घटना को सम्बन्धित व्यक्ति के साथ मिलाइए–

राजा राममोहन राय	देशीय राज्यों का संगठन
महात्मा गाँधी	भारत पर चीन का आक्रमण
सरदार पटेल	भारत छोड़ो आन्दोलन
जवाहर लाल नेहरू	ब्रह्म समाज व सती प्रथा उन्मूलन

वर्गीकरण रूप–

यह मिलान प्रश्नों का ही एक रूप है। इसमें कुछ ऐसे शब्दों का समूह छात्रों के सामने आता है जिनमे से एक शब्द बेमेल (मेल नहीं खाता) होता है। छात्रों से उसी शब्द को चयनित करने के लिए कहा जाता है– जैसे–

निम्न प्रश्न में चार शब्द दिये गये हैं। इनमें से एक शब्द ऐसा है, जो अन्य से मेल नहीं खाता है। उस पर निशान लगाइये–

(1) लखनऊ, कानपुर, इन्दौर, अमेरिका

(2) गाँधी, नेहरू, बाबर, शास्त्री

प्रत्यास्मरण रूप–

(1) सरल प्रत्यास्मरण रूप– इन प्रश्नों से छात्रों की विषय से सम्बन्धित प्रत्यास्मरण शक्ति की परख होती है। जैसे–

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर उनके सामने दिये गये स्थान पर लिखिए–

(1) ताजमहल किसने बनवाया था? (शाहजहाँ)

(2) मनोविज्ञान, मानव व्यवहार और मानव सम्बन्धों का अध्ययन है। (क्रो व क्रो)

(3) π का मान कितना होता है? (3.14 / $\frac{22}{7}$)

(4) परिधि व्यास स्थिरांक के रूप में किस प्रकार लिखते हैं? (π)

(2) रिक्त स्थान पूर्ति– इन प्रश्नों में छात्रों से रिक्त स्थानों की उचित शब्दों द्वार पूर्ति करने को कहा जाता है जैसे–

(1) भारत के पहले राष्ट्रपति............................ थे।

(2) भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री.......... थीं।

मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का वह अंग है जिसके द्वारा बालकों के सीखने के अनुभवों का मापन किया जाता है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। यह सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्व पूर्ण अंग है। इसका शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। यह परीक्षण की वह व्यापक प्रक्रिया है, जिसमें मापन तथा जाँच दोनों ही सम्मलित है। इससे परीक्षा प्रणाली में सुधार भी होता है। इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारत में प्रचलित परीक्षा प्रणाली का एकमात्र लक्ष्य परीक्षा है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं, परन्तु प्राचीन मूल्यांकन पद्धति में केवल दीर्घ उत्तरीय प्रश्न ही पूछे जाते थे, जिसमें छात्रों का मूल्यांकन सही तरीके से नहीं हो पाता था न ही पाठ्यक्रम का मूल्यांकन हो पाता था। साथ ही यदि नवीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत यदि केवल वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही पूछे जाते हैं तो इससे भी छात्रों का एकपक्षीय मूल्यांकन हो पाता है जिससे छात्रों की मौखिक लिखित अभिव्यक्ति विकसित नहीं हो पाती।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि दोनों ही प्रणालियाँ चाहे वे नवीन परीक्षा प्रणाली हो या प्राचीन परीक्षा प्रणाली, दोनों का ही सुन्दर समावेश होना चाहिए। अतः निम्नांकित प्रकार से प्रश्नों को मूल्यांकन में सम्मलित करना चाहिए–

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. शिक्षण तकनीकी, डा0 आर एम मिश्रा, द्वितीय संस्करण 1996, आलोक प्रकाशन 165/64ख, कच्चा हाता, अमीनाबाद, लखनऊ ब्रान्च–110, विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद।
2. शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकी, डा0 सीताराम जायसवाल, प्रकाशन केन्द्र रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ– 226020
3. अधिगम के लिए ऑंकलन, प्रो0 रमन बिहारी लाल, श्रीमती सुनीता पलोड़, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज बेगम ब्रिज रोड, मेरठ– 250001 संकरण 2017
4. शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, डा0 मालती सारस्वत, आलोक प्रकाशन लखनऊ– इलाहाबाद, दशम संस्करण – 1997

5. शैक्षिक तकनीकी, डा0 एस. एस. माथुर, विनोद पुस्तक मन्दिर,–हास्पीटल रोड, आगरा–3, प्रथम संस्करण 1995
6. संस्कृत एवं सूक्ष्म प्राविधिकी, प्रो0 राजेश्वर उपाध्याय एवं प्रो0 श्रीधर वशिष्ठ, डा0 हरिश्चन्द्र सिंह, भारतीय विद्या संस्थान जगतगंज वाराणसी– 221002 प्रथम संस्करण– 1992–93
7. भारतीय समाज मुद्दे एवं समस्याएँ, डा0 धर्मवीर महाजन एवं डा0 (श्रीमती) कमलेश, 2008, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–7
8. भारत में सामाजिक परिवर्तन, एम. एस. गुप्ता एवं डी. डी. शर्मा, 1987, साहित्य भवनः आगरा।
9. साहित्यिक निबन्ध, डा0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना, मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज मेरठ–25001
10. भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ प्रो. रमन बिहारी लाल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स गंगोत्री शिवाजी रोड मेरठ–250002 छठा संस्करण, 2010–11
11. भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ श्री पी.डी. पाठक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, ग्यारहवाँ संस्करण 1991–921
12. शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग; प्रो0 रमन बिहारी लाल, आरलाल बुक डिपो मेरठ, द्वितीय संस्करण, 2006–07
13. उदीपमान भारतीय समाज में शिक्षक; एन0आर0 स्वरूप सक्सेना; डा0 शिखा चतुर्वेदी; डा0 के0पी0 पाण्डेय; आरलाल बुक डिपो; संस्करण– 2006
14. शिक्षा एवं भारतीय समाज; डा0 रामपाल सिंह, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
15. संस्कृत शिक्षण, डॉ0 के. सी. गौड़ व डॉ. सुनीता गौड़ अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)
16. सृजनात्मकता, बुद्धि एवं व्यक्तित्व, डॉ. के. सी. गौड़ व डॉ. सुनीता गौड़ लायल बुक डिपो, मेरठ।
17. हिन्दी शिक्षण, डॉ0 के. सी. गौड़ व डॉ. सुनीता गौड़ अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)